राधा कमल मुखर्जी

राधा कमल मुखर्जी का जन्म 7 दिसंबर 1889 को पश्चिम बंगाल के बरहामपुर नमक छोटे से कस्बे में हुआ था। उनके पिता गोपालचंद मुखर्जी एक प्रतिष्ठित वकील थे। राधा कमल मुखर्जी ने अपनी 17 वर्ष की आयु में सन 1906 में कोलकाता के मेचू बाजार की गन्दी बस्तियों में प्रौढ़ों को शिक्षा देने के लिए एक सांयकालीन प्रौढ़ केंद्र स्थापित किया। सन 1915 में बंगाल में चल रहे सहकारिता आंदोलन पर शोध कार्य करने के लिए मुखर्जी को "प्रेमचंद राय चंद्र " छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया। सन 1916 में उनकी पहली पुस्तक भारतीय अर्थशास्त्र के आधार (दि फेडरेशन ऑफ इंडियन इकोनॉमिक्स) प्रकाशित हुई । इसी अवधि में उनकी वनस्पति विज्ञान में भी रुचि बढ़ने लगी जिससे आगे चलकर उन्हें सामाजिक पारिस्थितिकी (सोशल इकोलॉजी) जैसी महत्वपूर्ण पुस्तक लिखने की प्रेरणा दी। सन 1917 में जब कोलकाता विश्वविद्यालय में आशुतोष मुखर्जी ने वहां कला और विज्ञान की स्नातकोत्तर परिषद की स्थापना की। तब उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र समाजशास्त्र और राजनीतिक दर्शन का अध्ययन करना शुरू कर दिया। यही से उन्हें भारतीय ग्रामीण समुदाय में सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन विषय पर शोध प्रबंध प्रस्तुत करने पर डॉक्टरेट की उपाधि मिली। सन 1921 में लखनऊ विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना हुई तो राधा कमल मुखर्जी यहां अर्थशास्त्र समाजशास्त्र विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के रूप में नियुक्त हुए। सन 1921 से लेकर 1968 तक आपने जीवन का शेष काल लखनऊ विश्वविद्यालय में रहकर व्यतीत किया। राधा कमल मुखर्जी अपने बौद्धिक जीवन में तीन सामाजिक विकास को बृजेंद्र नाथ सील, पैट्रिक गिड्स तथा नरेंद्र सेन गुप्ता से प्रभावित थे।

राधा कमल मुखर्जी अनेक बौद्धिक संगठनों से जुड़े रहने के साथ ही सन 1955 से 1958 तक लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। इसके बाद यद्यपि वे सेवानिवृत हो चुके थे लेकिन विश्वविद्यालय के लिए उनके बौद्धिक योगदान को देखते हुए सन 1958 में उन्हें विश्वविद्यालय के जे.के. इंस्टीट्यूट आफ सोशियोलॉजी के आनरेरी निदेशक के पद पर नियुक्त कर दिया गया। अगस्त 1968 में अपनी मृत्यु तक राधा कमल मुखर्जी इसी पद पर रहते हुए विश्वविद्यालय की सेवा करते रहे।

प्रोफेसर राधा कमल मुखर्जी ने विभिन्न विषयों पर जो पुस्तक लिखी हैं इस प्रकार हैं:-

1- भारतीय अर्थशास्त्र के आधार (दि फाउंडेशन ऑफ इंडियन इकोनॉमिक्स 1916)
2- तुलनात्मक अर्थशास्त्र के सिद्धांत (दी प्रिंसिपल आफ कंपैरेटिव इकोनॉमिक्स 1922)
3- पूर्व के लोकतंत्र (डेमोक्रेटिक ऑफ द ईस्ट 1923)
4- अर्थशास्त्र की परिधियां (बॉर्डरलैंड्स ऑफ इकोनॉमिक्स 1925)
5- क्षेत्रीय समाजशास्त्र (रीजनल सोशियोलॉजी 1926)
6- सामाजिक मनोविज्ञान का परिचय : समाज में मस्तिष्क (इंट्रोडक्शन टू सोशल साइकोलॉजी माइन्ड इन सोसाइटी 1928)
7- रहस्यवाद का सिद्धांत एवं कला (दी थिअरी एंड आर्ट ऑफ़ मायस्टिसिज्म 1937)
8- मानव तथा उसकी बस्ती (मैन एण्ड हिज हैबिटेशन 1940)
9- सामाजिक पारिस्थितिकी (सोशल इकोलॉजी 1945)
10- कला का सामाजिक प्रकार्य (दी सोशल फंक्शन ऑफ़ आर्ट 1948)
11- मूल्यों की सामाजिक संरचना (दी सोशल स्ट्रक्चर आफ वैल्यूज 1949)
12- जीवन की भारतीय पद्धति (दी इंडियन स्कीम ऑफ लाइफ 1949)
13- आचारों की गत्यात्मकता (दी डायनॉमिक्स ऑफ़ मोरल्स 1951)
14- भारतीय सभ्यता का इतिहास (ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन सिविलाइजेशन 1956)
15- विवाह की परिधि (दी होरिजन आफ मैरिज 1956)
16- भारत की संस्कृति एवं कला (द कल्चर एंड आर्ट ऑफ़ इंडिया 1959)
17- समाज विज्ञान का दर्शन (दी फिलासफी आफ सोशल साइंस 1960)
18- व्यक्तित्व का दर्शन (दी फिलॉसफी ऑफ़ पर्सनालिटी 1963)
19- मानव उद्विकास के आयाम (दी डायमेंशन ऑफ़ ह्यूमन इवोल्यूशन 1963)
20- मूल्य के आयाम (दी डायमेंशन का वैल्यूज 1964)
21- सभ्यता का घनत्व (दी डेंसिटी ऑफ़ सिविलाइजेशन 1964)

22- मानवता की एकात्मकता (ओनएस आफ मैनकाइंड 1965)
23- भारत की यहिक कला (दी कॉस्मिक आर्ट ऑफ इंडिया 1965)
24- समुदायों का समुदाय (दी कम्युनिटी आफ कम्युनिटीज 1966)
25- मानव का दर्शन (दी फिलोसोफी का मैन 1966)
26- दी सॉन्ग ऑफ़ द सेल्फ सुप्रीम 1971 नामक उनकी पुस्तक उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई।

भारत में व्यावसायिक रूप से समाजशास्त्र की शुरुआत करने वाले दिग्गजों में राधा कमल मुखर्जी की गणना प्रथम पीढ़ी के विद्वान समाज शास्त्रियों में की जाती है ज्यादा कमल मुखर्जी ने भारतीय सामाजिक यथार्थ को समझने के लिए पश्चिमी समाज विज्ञान मॉडल और मार्क्सवादी मॉडल दोनों को ही अनुपयुक्त और अपर्याप्त बताया है और इसके स्थान पर ऐसे मानव सापेक्षिक सामान्य सिद्धांत के प्रयोग का सुझाव दिया है जिसमें विशिष्टा के साथ-साथ सार्वभौमिकता के मापदंड सम्मिलित हो।

राधा कमल मुखर्जी ने आर्थिक समाजशास्त्र के क्षेत्र में सूक्ष्म स्तर पर समस्याओं के विश्लेषण से शुरुआत की। उन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था और भूमि की समस्याओं तथा कामगार वर्ग की समस्याओं को प्रारंभ में अपने अध्ययन अनुसंधान का केंद्र बनाया। उन्होंने कृषक वर्ग की दशाओं और कृषक संबंधों पर कई शोध कार्य किया। प्रोफेसर मुखर्जी समाजशास्त्र के क्षेत्र में प्रमुख रूप से समाकलित अंतर्अनुशासन पद्धति, सामाजिक मूल्य तथा सामाजिक पारिस्थितिकी (इकोलॉजी) संबंधी अपनी विशिष्ट विचारों के लिए जाने जाते हैं। मुखर्जी ने अपने अध्यापन तथा शोध कार्य दोनों में ही सामाजिक विज्ञानों के विभिन्न क्षेत्रों में परस्पर अंतर्क्रिया की आवश्यकता पर बल दिया। वह मानवीय समस्याओं के अध्ययन में समाकलित उपागम (इंटीग्रेटेड अप्रोच) के प्रयोग के समर्थक रहे हैं। अपने अर्थशास्त्र के संस्थागत सिद्धांत में मुखर्जी ने परंपरा और मूल्यों की भूमिका को न केवल स्वीकार है अपितु यह बताया है कि किस प्रकार आर्थिक सिद्धांत भौतिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है।

राधा कमल मुखर्जी की रुचि मानव समाज पर नैतिक मूल्यों की प्रभाव के संबंध में एक लंबे समय से रही है। उन्होंने मूल्य का गहन अध्ययन किया है और और दो पुस्तकें - "मूल्य की सामाजिक संरचना" तथा "मूल्य के आयाम" नाम से लिखी हैं। मूल्य संबंधी उनके विचार अधिकांश लेखनों में प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से छाए हुए हैं । मुखर्जी ने मूल्यों की परिभाषा उत्पत्ति, प्रकार , विशेषताओं और मानव जीवन में इनकी महत्ता का विस्तार से वर्णन विश्लेषण किया है । मूल्य के बारे में मुखर्जी ने विशेषतः दो मूलभूत मुद्दों पर ध्यान आकर्षित किया है-

प्रथम- उन्होंने यह कहा है की मूल्य धर्म और राजनीति शास्त्र तक सीमित नहीं है, अपितु अलग-अलग क्षेत्र के अलग-अलग मूल्य भी हैं, जैसे - आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, वैधानिक मूल्य, शैक्षिक मूल्य, नैतिक मूल्य, पारिस्थितिकी मूल्य आदि। जीवन के विभिन्न पक्षों से जुड़े मूल्यों में आपस में एक प्रकार्यात्मक संबंध होता है। परिणामस्वरुप समाज में संतुलन और व्यवस्था बनी रहती है।

द्वितीय- मूल्य आत्मनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक आकांक्षाओं का परिणाम नहीं होते, अपितु यह मूल्य हमारी आकांक्षाओं और इच्छाओं में समाविष्ट होते हैं, अर्थात मूल्य सामान्य और वस्तुनिष्ठ दोनों होते हैं।

मूल्यों को परिभाषित करते हुए मुखर्जी ने लिखा है कि "मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत ऐसी इच्छाएं और लक्ष्य हैं जिनका आन्तरीकरण,अनुकूलन, सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा होता है। ये मूल्य व्यक्तिपरक वरीयताओं, मानकों और आकांक्षाओं का रूप धारण कर लेते हैं।" इन मूल्यों की उत्पत्ति एक समाज विशेष के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु की जाने वाली रोजमर्रा की अंतः क्रिया के फलस्वरूप धीरे-धीरे होती है। समाज में व्यवस्था शांति बनाए रखने के लिए समाज नियमाचारों , कानूनों , अपेक्षाओं के रूप में मानदंडों को जन्म देता है, जो कालांतर में समाज के सदस्यों के लक्ष्य और इच्छाएं बन जाते हैं। ये ही बाद में समाज के मूल्यों का रूप धारण कर लेते हैं। मुखर्जी ने मूल्यों को दो वर्गों में विभाजित किया है - साध्य मूल्य और साधन मूल्य। साध्य मूल्य मानव के आंतरिक जीवन से संबंधित ऐसे लक्ष्य एवं तृप्तियां हैं जिन्हें व्यक्ति और समाज दोनों ही जीवन और मस्तिष्क के विकास के लिए आवश्यक मानते हैं। यह मूल्य व्यक्ति के आचरण के अंग होते हैं। साधन मूल्य प्रथम प्रकार के मूल्य अर्थात साध्य मूल्यों को प्राप्त करने, निर्वाह करने, विकसित करने में सहायता करते हैं। साधन मूल्य विशिष्ट और अस्तित्वात्मक होते हैं। मुखर्जी ने मूल्य तथा अपमूल्यों (नकारात्मक मूल्यों) में भी भेद किया है। समाज द्वारा स्वीकृत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए स्वीकृत मानदंडों की उपेक्षा कर जब उनके विरुद्ध आचरण किया जाता है, तो इस स्थिति को सामाजिक मूल्यों का उल्लंघन अथवा अपमूल्य कहा जाता है।

राधा कमल मुखर्जी के मूल्य के सिद्धांत की तीन प्रमुख विशेषताएं हैं:-
प्रथम -मूल्य जन समूह की आधारभूत अतः प्रेरणाओं को व्यवस्थित रूप में संतुष्ट करते हैं। द्वितीय -मूल्य का रूप सामान्य होता है। इनमें व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों प्रकार के मनोभाव और प्रतिक्रियाएं सम्मिलित होती हैं। तृतीय - मानव मूल्य में विभिन्नताओं के बावजूद कुछ सार्वभौमिक मूल्य है। सभी धर्म इन सार्वभौमिक मूल्य के भंडार हैं और इन पर बल देते हैं। पिछले कुछ दशकों में मूल्य रहित या मूल्य तटस्थ सामाजिक विज्ञान का विचार भारत सभी देशों में उभरा है। इस विषय पर काफी वाद-विवाद हुआ है जो अभी भी जारी है। मुखर्जी के विचार में तथ्य और मूल्य को अलग-अलग समझना सही नहीं है मानव अतः क्रियाओं में इन दोनों को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है तथा उनके मूल्य प्रतिमान लोगों के व्यवहार का निर्देशन करते हैं। इसलिए पश्चिम की प्रत्यक्षवादी विचारधारा जो तथ्यों और मूल्यों को अलग-अलग रूप में देखती है भारतीय समाज के संदर्भ में मुखर्जी पसंद नहीं करते हैं।

राधा कमल मुखर्जी का सामाजिक पारिस्थितिकी संबंधी विचार
राधा कमल मुखर्जी ने सामाजिक पारिस्थितिकी संबंधी पुस्तक एवं अनेक लेख लिखकर इस विषय में गहन रुचि प्रदर्शित की है। उनकी दृष्टि में सामाजिक पारिस्थितिकी एक मिश्रित विज्ञान है, जिसमें कई सामाजिक विज्ञानों का परस्पर आदान-प्रदान होता है। इसमें मानव जीवन पर सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक कारकों सहित भू-वैज्ञानिक, भौगोलिक एवं जैविक कारकों के सम्मिलित प्रभाव को आंका जाता है। इस संदर्भ में मुखर्जी ने मानव समुदायों के अध्ययन में प्राकृतिक विज्ञानों विशेषतः वानस्पतिक पारिस्थितिकी शब्दावली यथा संतुलन, संगठन, वितरण, अनुक्रमण, अनुकूलन, बेदखलन आदि का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया है कि मानव पारिस्थितिकी और समाज के बीच गहरा संबंध है। अतः एक पारिस्थितिकी क्षेत्र के विकास को एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए। पारिस्थितिकी क्षेत्र के विकास को एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए। मुखर्जी के अनुसार मानव संबंधों के अध्ययन में मानव प्रदेश ही एक उचित इकाई है क्योंकि एक प्रदेश विशेष में ही हम एक दूसरे के साथ अंतर्क्रिया करने वाले, एक संस्कृति को मानने वाले मानव समूह और पौधे पशुओं एवं उनके निर्जीव पर्यावरण के बीच पाए जाने वाले जटिल अंतर्संबंधों को ठीक प्रकार से समझ सकते हैं। संभवत: मानवीय सामाजिक व्यवहारों सामाजिक संस्थाओं तथा अनुकूलन की मानवीय समस्याओं को प्रादेशिक संकुल से अलग करके पूर्ण रूप से समझना कठिन है।

मुखर्जी ने सामाजिक पारिस्थितिकी के दो मोटे प्रकार बताएं हैं:- व्यवहारिक पारिस्थितिकी तरह और सामुदायिक पारिस्थितिकी। व्यवहारिक पारिस्थितिकी इस तथ्य पर बोल देती है कि मानव प्रकृति का दास नहीं है, अपितु वह उसका एक सहयोगी है। इसमें मानवीय जनसंख्या, प्राकृतिक साधन, वनस्पति और पशु जगत के बीच पारिस्थितिकीय संतुलन का अध्ययन किया जाता है। समुदाय पारिस्थितिकी में मानव भूगोल, मानव जीवशास्त्र, अर्थशास्त्र समाज मनोविज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ-साथ पारिस्थितिकी संबंधों और आपसी अंतर्क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

मुखर्जी के सामाजिक पारिस्थितिकी संबंधी विचार यद्यपि पाश्चात्य समाज वैज्ञानिकों द्वारा प्रभावित हैं, तथा उन्होंने कई स्थानों पर उनसे भिन्न मत भी प्रकट किए हैं। उन्होंने भारत के नवनिर्माण के सन्दर्भ में मूल्य के महत्व को रेखांकित कर यह कहा है कि भारत के नवनिर्माण योजना बनाते समय मात्र तात्कालिक और प्रत्यक्ष समस्याओं को भी ध्यान में शरखा जाना चाहिए, अपितु ये विकास योजनाएं मूल्य पर आधारित होनी चाहिए।

राधा कमल मुखर्जी ने भारतीय कला, वास्तु कला, इतिहास और संस्कृति के बारे में भी अध्ययन किया है उन्होंने यह विश्वास व्यक्त किया है कि एशियाई कला का उद्देश्य समाज का सामूहिक विकास करना है। उनकी दृष्टि में प्राच्य कला सामुदायिक भावना से ओत-प्रोत है, अतः यह प्राच्य संस्कृति की ऐतिहासिक निरंतरता को बनाए हुए है। इसके विपरीत पश्चिम में इस प्रकार के कलात्मक प्रयासों के पीछे या तो व्वैयक्तिक भावना प्रधान होती है, या फिर कला के लिए कला ही इसका उद्देश्य होता है। यह न तो सामाजिक एकात्मकता में और न ही आध्यात्मिक विकास में सहायक होती है।

भारतीय कला सामाजिक और नैतिक क्षेत्र में अंतर निहित है। भारतीय कला सदैव धर्म के साथ जुड़ी रही है भारतीय कला और धर्म ने श्रीलंका, कंबोडिया, तिब्बत तथा कई अन्य देशों की संस्कृतियों को प्रभावित एवं समृद्ध

किया है और इस प्रक्रिया में वहां एक नई संस्कृति का उदय हुआ है। भारतीय धर्मों (हिंदू, जैन, बौद्ध) की अनुपम विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए मुखर्जी ने लिखा है कि इसमें किसी विशिष्ट प्रकार के विश्वासों या संस्कारों का आग्रह नहीं है, बल्कि इन सभी धर्म का लक्ष्य परम सत्य की खोज रहा है। यदि इन धर्मों के धार्मिक विधि-विधानों की ठीक ढंग से व्याख्या की जाए तो इसमें मूल्य और प्रतिमानों का एक ऐसा ढांचा अंतर्निहित है, जिसमें विभिन्न समूह एक साथ व्यवस्थित रूप में रह सकते हैं। इससे यह प्रकट होता है कि भारतीय कला और यहां के धर्म अत्यधिक सहिष्णु रहे हैं।

राधा कमल मुखर्जी ने सार्वभौम सभ्यता (संस्कृति) की धारणा पर भी विचार व्यक्त किया है। उन्होंने समाज के सामान्य सिद्धांत द्वारा सार्वभौम में सभ्यता के मूल्यों का विश्लेषण कर मानव सभ्यता को तीन स्तरों में विभाजित किया है। ये स्तर एक दूसरे से संबंध हैं । प्रथम स्तर पर जैविक विकास की चर्चा की है, जिसमें मानव सभ्यता के उदय और विकास में सहायता की है। द्वितीय स्तर पर उन्होंने सभ्यता की सामाजिक मनोवैज्ञानिक आयाम की व्याख्या की। सामान्यतः माना जाता है कि मानव जाति स्वार्थ एवं अहंकार के शिकंजे में फैंसी है और उसकी मनोवृति संकुचित या नृजाति केंद्रित है, किंतु इसके विपरीत मानव जाति में इस बात की भी क्षमता है कि वह अपनी संकीर्ण भावनाओं को दबाकर या उन पर काबू पाकर सार्वभौमिकता को प्राप्त कर सकती है। तीसरे स्तर पर उन्होंने सभ्यता के आध्यात्मिक आयाम का विश्लेषण कर यह बताया कि मानव निरंतर जैविक और अस्तित्वपरक (भौतिक और सांसारिक) सीमाओं को लांघकर आध्यात्मिकता की सीढ़िया पर निरंतर अग्रसर होता जा रहा है। इस प्रयास ने मानव को कला, मिथक और धर्म ने आध्यात्मिक क्षेत्र में बढ़ाने की प्रेरणा दी है। सामाजिक विज्ञानों ने इन सांस्कृतिक तत्वों को नजरअंदाज कर दिया था किंतु मुखर्जी ने अपने लेखनों में उनके अध्ययन पर विशेष जोर दिया है।